International Journal of Geography, Geology and Environment 2023; 5(2): 199-202

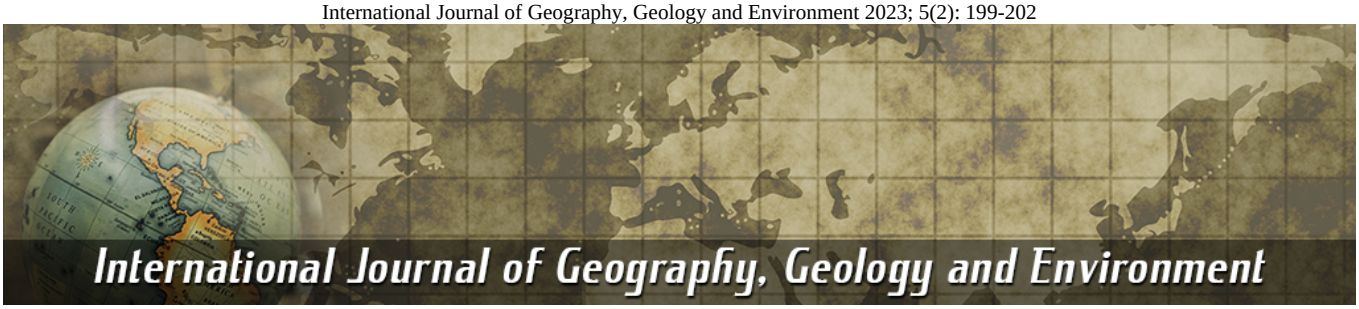

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2023; 5(2): 199-202
Received: 20-09-2023
Accepted: 30-10-2023

डॉ. उपदेश कुमार
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, भुसावर, भरतपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. उपदेश कुमार
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, भुसावर, भरतपुर, राजस्थान, भारत

जयपुर महानगर की नगरीय पारिस्थितिकी का एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. उपदेश कुमार

सारांश
जयपुर महानगरीय क्षेत्र में अत्यधिक जनसंख्या निवास करती है, जहाँ उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है, साथ ही तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि हो रही है, जिसका कारण प्राकृतिक जन्मदर तथा लोगों का आप्रवास है। जयपुर शहर के बाजारों में अत्यधिक भीड़–भाड़ रहती है। उर्जा, खाद्य पदार्थ, वस्तुओं तथा अन्य सामानों का बाहर से आयात किया जाता है। जयपुर महानगरीय क्षेत्र में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हैं, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, उच्च गुणवत्तायुक्त चिकित्सीय सुविधाएं, मनोरंजन के विविध केन्द्र, अनेक ऐतिहासिक स्थल, प्रसिद्ध धार्मिक स्थल, विविध जन–सुविधाऐं आदि स्थित है, जिस कारण महानगरीय पारिस्थितिकी विविधता लिए हुए है। अध्ययन क्षेत्र में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण आवास की कमी, मलिन बस्तियों में वृद्धि एवं पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

कूटशब्दः जनसंख्या घनत्व, पारिस्थितिकी, जन–सुविधाऐं, पर्यावरण प्रदूषण

प्रस्तावना
महानगरीय पारिस्थितिकी के मानव घटक के अन्तर्गत एक बड़ी संख्या में लोग साथ–साथ निवास करते हैं। वर्तमान समय में तो एक नगरीय क्रांति सी दिखाई पड़ती है क्योंकि सम्पूर्ण विश्व में लोग नगरों एवं शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। 1800 ई. में शहरी आबादी के रूप में विश्व की जनसंख्या का केवल 5 प्रतिशत (50 मिलियन लोग) ही थी, जो कि वर्ष 1985 में बढ़ कर 2 बिलियन हो गई। वर्तमान में विश्व की कुल जनसंख्या का 45 प्रतिशत शहरी आबादी के रूप में है, साथ ही जनसंख्या वृद्धि इस ही दर से होती रही तो वर्ष 2030 तक 60 प्रतिशत से अधिक लोग शहरों मे रह रहे होंगे। जयपुर महानगर की कुल जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 3046163 है जिसमें पुरूषों की संख्या 1603125 एवं महिलाओं की संख्या 1443038 है। महानगरीय पारिस्थितिकी में जनांकिकीय संरचना के साथ साथ लोगों के निवास की विभिन्न दशाओं तथा उनके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के पारस्परिक समन्वय का विश्लेषित अध्ययन किया जाता है, साथ ही इनमें स्थापित अन्तर–क्रियाओं से उत्पन्न दशाओं के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं में सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र
जयपुर महानगर की अवस्थिति $26^0$46′ उत्तरी अक्षांश से $27^0$01′ उत्तरी अक्षांश तथा $75^0$37′ पूर्वी देशान्तर से $76^0$57′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। यह शहर राजस्थान प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी भाग में अरावली पहाड़ियों की गोद में स्थित है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई लगभग 425 मीटर है। यह महानगर रेल, सड़क, मेट्रो व वायुमार्गों से जुडा हुआ है। यह उत्तर पूर्व में दिल्ली से 308 किमी., पूर्व में आगरा से 242 किमी., पश्चिम में अजमेर से 136 किमी. तथा दक्षिण में कोटा 250 किमी. पर स्थित है। सड़क मार्ग में राष्ट्रीय राजमार्ग न. 48 दिल्ली–मुम्बई, राष्ट्रीय राजमार्ग न. 21 आगरा–बीकानेर शहर से होकर गुजरते हैं। इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय राजमार्ग न. 52 जयपुर–कोटा, राष्ट्रीय राजमार्ग न. 248 जयपुर–चन्दवाजी को जोडते हैं। जयपुर महानगर राजस्थान राज्य की राजधानी है। इस नगर की स्थापना सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। इसे गुलाबी नगरी तथा यहाँ कोई भी बड़ी नदी प्रवाहित नहीं होती है। कई छोटे–बड़े नदी नाले प्रवाहित होते हैं। यहाँ की जलवायु अर्द्धशुष्क प्रकार की है तथा यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 560 मिलीमीटर होती है। यहाँ समतल धरातल, अनुकूल जलवायु, उपजाऊ मृदा, रोजगार के अवसर, शिक्षण संस्थानों, चिकित्सालय एवं अन्य सुविधाओं के कारण तीव्र नगरीकरण की प्रवृति पायी जाती है।

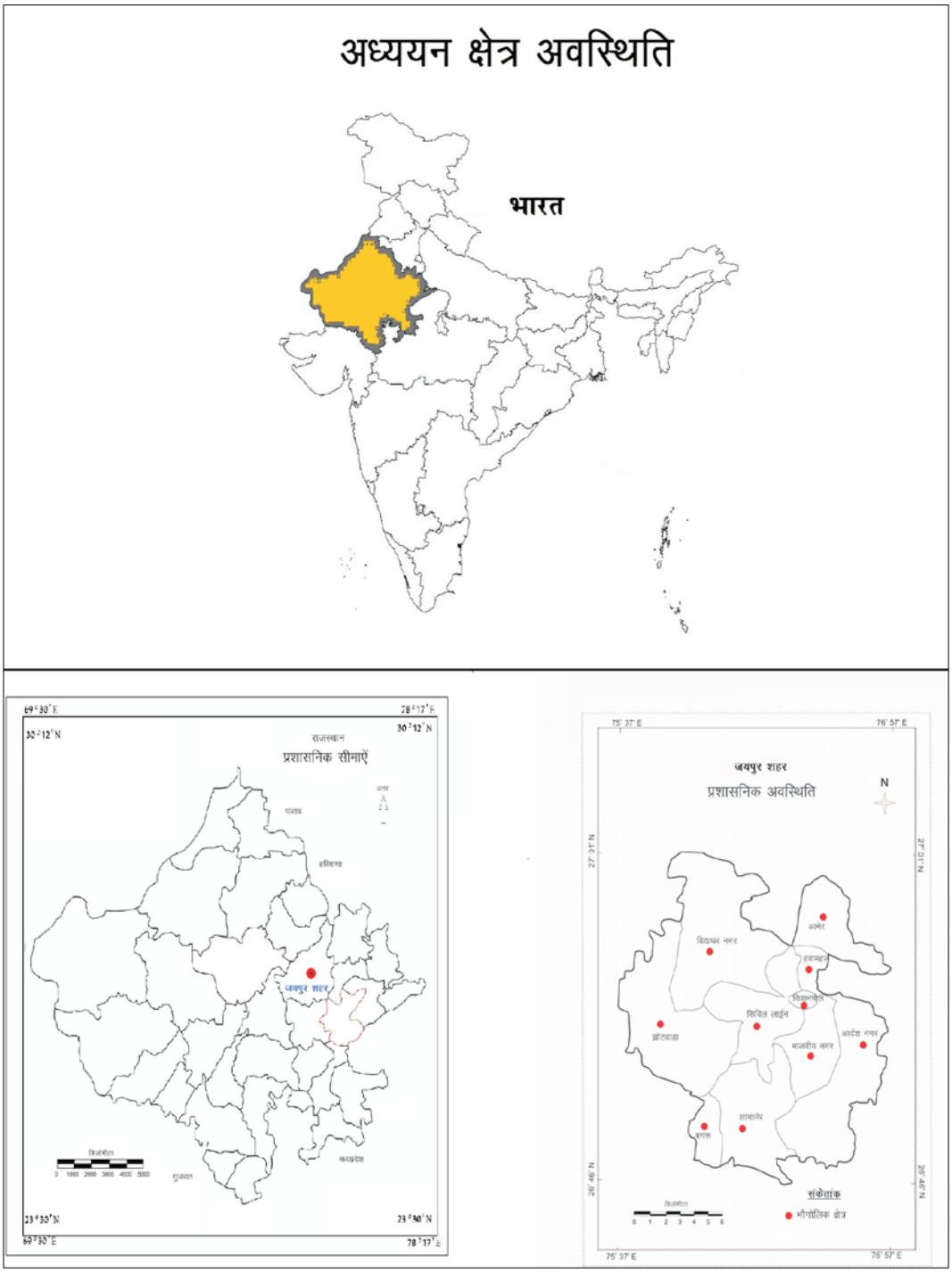

मानचित्र 1: जयपुर महानगर की अवस्थिति

उद्देश्य

1. जयपुर महानगर में नगरीय पारिस्थितिकी की विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में नगरीय पारिस्थितिकी से होने वाले लाभ का अध्ययन करना।

परिकल्पना

पिछले दशकों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण जयपुर की महानगरीय पारिस्थितिकी प्रभावित हुई है।

शोध विधि

उक्त अध्ययन में उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित सूचनाएँ सरकारी एवं गैर–सरकारी कार्यालयों से एकत्रित की गयी हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

1. **प्राथमिक स्रोत :** अनुसूची, परिचर्चा तथा व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किए गये हैं।
2. **द्वितीय स्रोत :** प्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, प्रगति प्रतिवेदनों, लेखों एवं पुस्तकों से द्वितीयक आंकड़े एकत्रित किए गये है।

शोध पत्र के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकडों के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

जयपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि

किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उस क्षेत्र की सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं आर्थिक प्रगति आदि का

परिणाम होती है। एक तय समयावधि में किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों की संख्या में हुये धनात्मक परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि द्वारा प्रकट किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या तथा प्रतिशत दोनों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिये निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनगणना से भाग देकर 100 से गुणा कर दिया जाता है तथा वास्तविक वृद्धि दर ज्ञात करने के लिये 10 का भाग देकर ज्ञात की जाती है।

तालिका 1: जयपुर महानगर में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में)
1931	150000	–
1941	175810	17.21
1951	291130	65.59
1961	403444	38.58
1971	615258	52.5
1981	977165	58.82
1991	1458438	49.26
2001	2322575	62.77
2011	3046163	29.45

स्त्रोतः जनगणना विभाग, राजस्थान–1931 से 2011

जयपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत वर्ष 1931 के दशक से वर्ष 2011 तक के दशक का अध्ययन किया गया है। वर्ष 1931 मे जयपुर की जनसंख्या 150000 थी जो वर्ष 1941 मे बढकर 175810 हो गई अर्थात 1931 से 1941 के दशक में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में 17.21 प्रतिशत की वृद्वि हुई। वर्ष 1941 से वर्ष 1951 के दशक में क्षेत्र की जनसंख्या मे 65.59 प्रतिशत की वृद्वि हुई है, जो कि अभी तक की सर्वाधिक वृद्धि दर थी।

वर्ष 1951 से 1961 के दशक में क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि कम हुई है यह वृद्धि 38.58 प्रतिशत रही है जिसमें परिवार नियोजन कार्यक्रमों की पालना का प्रभाव रहा है। वर्ष 1961 से वर्ष 1971 तक जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत बढ़ा है, जो की 52.50 प्रतिशत रहा है। वर्ष 1971 से 1981 के मध्य यह 58.82 प्रतिशत रहा है जबकि वर्ष 1981 से 1991 के दशक में यह वृद्धि कम हुई और 49.26 प्रतिशत हो गई।

जयपुर महानगर में वर्ष 2001 में जनसंख्या बढ कर 62.77 प्रतिशत हो गई जबकि वर्ष 2011 में वृद्धि की दर में अचानक गिरावट में तेजी आई है और यह घटकर मात्र 29.45 प्रतिशत ही रह गई है, जिसका मुख्य कारण जागरूकता एवं शिक्षा का प्रचार रहा है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि जयपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि परिवर्तनशील और काफी उतार–चढ़ाव वाली रही है। संरचनात्मक सुविधाओं का विकास और उसकी गहनता से वृद्धि के साथ द्वितीयक और तृतीयक सेवाओं में वृद्धि का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर स्पष्ट देखा गया है।

महानगरीय पारिस्थितिकी की विशेषताएं

1. जयपुर महानगरीय क्षेत्र में अत्यधिक जनसंख्या निवास करती है, जो कि प्रदेश के सभी शहरों से अधिक है।
2. जयपुर महानगरीय क्षेत्र में उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है जो कि जनसंख्या के सघन वितरण को प्रदर्शित करता है।
3. जयपुर महानगरीय क्षेत्र में बाजारों में अत्यधिक भीड़–भाड़, आवास की कमी तथा मलिन बस्तियों में वृद्धि हुई है।
4. शहरी क्षेत्र उत्तरजीविता के लिए उर्जा, खाद्य पदार्थ, वस्तुओं तथा अन्य सामान की बढ़ती हुई मात्रा का बाहर से आयात करता है।
5. अत्यधिक मात्रा में ठोस और द्रव अपशिष्ट पदार्थ उत्पन्न करते हैं तथा वायु प्रदूषक पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न करते हैं।
6. जयपुर महानगर में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हैं और साथ ही अत्यधिक प्रतिस्पर्धा भी पायी जाती है।
7. अध्ययन क्षेत्र में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा के केन्द्र के रूप में उपलब्ध हैं।
8. जयपुर महानगर में उच्च गुणवत्तायुक्त चिकित्सीय सुविधाएं और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा रही हैं, एस.एम.एस., दुर्लभ जी, फोर्टिस, इटरनल, सी के बिरला, राजस्थान आदि चिक्त्सिालय स्थित हैं।
9. जयपुर महानगर में मनोरंजन के विविध केन्द्र जैसे सिनेमा घर, फन–किंगडम, पिंक–पर्ल, चोखा पंजाब, चोखी ढ़ाणी, गौरव टावर आदि स्थित हैं, लोग यहाँ मनोरंजन हेतु आते रहते हैं।
10. जयपुर महानगर में अनेक ऐतिहासिक स्थल जैसे आमेर, जयगढ़, नाहरगढ़, हवामहल, जलमहल, जंतर–मंतर आदि स्थित हैं, जहाँ देशी–विदेशी पर्यटक आते रहते हैं।
11. जयपुर महानगर में अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल जैसे गोविन्द देव जी, खोले के हनुमान जी, मोतीडूंगरी गणेश जी आदि स्थित है, जहाँ श्रद्धालुओं का दर्शन के लिए तांता लगता है।

महानगरीय पारिस्थितिकी के लाभ

1. जयपुर महानगरीय क्षेत्र में सुनियोजित विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
2. जयपुर महानगरीय क्षेत्र में आवासों के क्षैतिज विस्तार के साथ–साथ ऊर्ध्वाधर विकास किया जा रहा है।
3. जयपुर महानगरीय क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से विकसित केन्द्र के रूप में उभर रहा है।
4. जयपुर महानगर प्रमुख पर्यटन केन्द्र के रूप में उभर रहा है।
5. महानगर में औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के फलतः आर्थिक विकास हुआ है।
6. अध्ययन क्षेत्र व्यापार के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है।
7. महानगर में बहुसांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण सुदृढ़ हुआ है।
8. चिकित्सीय सुविधाओं के बेहतर होने के कारण कम शिशु मृत्युदर पायी जाती है।
9. जयपुर महानगर में राजनीतिक गतिविधियों में अधिकता पायी जाती है।
10. महानगरीय क्षेत्र में शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाऐं उत्तम हैं।

महानगरीय पारिस्थितिकी के दुष्प्रभाव

1. महानगरीय पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का उपभोग अधिक होता है।
2. जयपुर महानगरीय क्षेत्र अत्यधिक प्रदूषित होता जा रहा है, क्योंकि दुपहिया व चारपहिया वाहनों और उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण बहुत अधिक मात्रा में प्रदूषक उत्पन्न होते हैं।
3. वर्तमान में जयपुर महानगरीय पारिस्थितिकी तंत्र में घरेलू तथा औद्योगिक उपयोग हेतु जल की कमी उत्पन्न होने लगी है।
4. महानगरीय पारिस्थितिकी तंत्र गीला एवं सूखा दोनों प्रकार का कचरा अधिक उत्पन्न करते हैं।
5. महानगर में औद्योगिक इकाईयों एवं यातायात के साधनों के कारण उत्पन्न होने वाला तीव्र शोर, ध्वनि प्रदूषण की वजह बनता है।
6. जयपुर महानगर में दूसरे क्षेत्रों से जनसंख्या आप्रवास के कारण अशांति, गरीबी, बेरोजगारी, अपराधों की संख्या बढ़ने लगी है।

7. महानगर में जनसंख्या घनत्व बढ़ने के कारण कई परिवार मलीन बस्तियों एवं झुग्गी झोपड़ियों में रहने को बाध्य हो गये हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर शहर के महानगरीय क्षेत्र की पारिस्थितिकी का विश्लेषण किया गया है। जयपुर महानगर में नगरीय जनसंख्या जयपुर नगर निगम क्षेत्र में ही निवास करती है। अध्ययन क्षेत्र की कुल शहरी जनसंख्या जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार 3046163 है। महानगर में जनसंख्या सघन रूप में निवास करती है। यहाँ शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आदि की सुविधाएं उत्तम स्थिति में हैं। महानगरीय क्षेत्र होने के कारण औद्योगिक, वाणिज्यिक तथा राजनीतिक गतिविधियां अधिक पायी जाती हैं, साथ ही शिशु मृत्यु दर कम पायी जाती है। जयपुर महानगर में अधिक जनसंख्या के कारण प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का अधिक उपयोग, यातायात के साधनों की अधिकता, औद्योगिक गतिविधियों की अधिकता पायी जाती है। इन सभी क्रियाकलापों के कारण अध्ययन क्षेत्र मृदा, वायु, जल एवं ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। अतः पिछले दशकों में लगातार जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में महानगरीय पारिस्थितिकी अत्यधिक प्रभावित हुई है।

सन्दर्भ

1. सक्सेना, एच.एम. (2022), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. सं. 45–52.
2. शर्मा, आर. एन. (2022). वाटर कन्जर्वेशन– स्ट्रेटेजीज एण्ड सोलुशन, रावत प्रकाशन, जयपुर, पृ. सं. 63–66.
3. भल्ला एल. आर. (2022), राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. सं. 76–87.
4. गौतम, अल्का (2020), कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन, पृ. सं. 61–68.
5. जोशी, रतन (2020), नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. सं. 38–47.
6. बंसल, सुरेश चन्द्र (2018), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, पृ. सं. 75–79.
7. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2015, 2018, 2020 जयपुर जिला।